ISO 9001:2008

मसाला समाचार

भाकृअनुप

ICAR

भाकृअनुप- भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
मेरिकुन्नु (पी. ओ.), कोषिक्कोड (केरल), भारत

अंक 26 खण्ड 2 (तिमाही)
अप्रैल - जून 2015

निदेशक की कलम से

दक्षिण पश्चिम मानसून आकर भी चले गये। परन्तु वह भी हमारे कार्यों मे बाधा नही बने हमने समय पर अदरक एवं हल्दी का रोपण कार्य सफलता पूर्वक पूर्ण किया। चेलवूर में 650 बेड तथा पेरुवण्णामुषि फार्म में 2498 बेड में अदरक एंव हल्दी का रोपण कार्य पूरा किया गया।

दिनांक 4 जून 2015 को पेरुवण्णामुषि के संसाधन सुविधा द्वारा मसाला पाउडर के निर्माण के लिये सुभिक्षा (संपूर्ण वृद्धि तथा गरीबी हटाने के लिये नवीन नारियल आधारित माइक्रो- इन्टरप्राइसस की चिरस्थायी वाणिज्यिक विकास) के साथ एम ओ यु करार हुआ। सुभिक्षा से 522 महिला स्वयं सहायक संघ, गुणवत्ता तथा शुद्धता के लिये मशहूर लगभग 27 उपजों के उत्पादन एवं विपणन कार्य से जुडी हुई है। सुभिक्षा द्वारा मसाला पाउडर का वाणिज्यिक उत्पादन अगस्त 2015 से शुरू हो जायेगा। मुझे बहुत खुशी है कि हमारे संसाधन सुविधा ने मसाला उपजों के वाणिज्यिक उत्पादन के लिये एफ एस एस ए आई (भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण) से "निर्माण लाइसेंस" प्राप्त किया।

हमने अपने काली मिर्च सूक्ष्म पोषण संयोजन का लाईसेंस अन्य उद्यमी (सर्वश्री श्रेय एग्रिटेक, हुब्ली, करनाटक) को दिया है। उन्होने अपना उत्पादक "पन्नियूर -एस" को दिनांक 11 मई 2015 को भाकृअनुप- भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड में लोकार्पण किया। इसके अलावा हमारे सूक्ष्म पोषण संयोजन का कृषि विज्ञान केन्द्रों, किसानों तथा लाइसेंसियों से प्राप्त प्रतिपुषिट बहुत आशाप्रद है। हस्सन, चिकमंगलूर तथा कूर्ग जिलों के कई किसानों ने उत्तम परिणाम की रिपोर्ट अंकित की है तथा विपणी में हमारे सूक्ष्म पोषण संयोजन आशावादी साबित हो रहे हैं। हमारे संपुटन तकनीकी की जगुदान केन्द्र में जांच हो रही है तथा पी जी पी आर बीज आवृत तकनीकी के लिए एम ए एच वाई सी ओ में सब्जी के खेत परीक्षण की प्रक्रिया चल रही है।

हमने यह साबित किया हैं कि हम तत्काल अवसरों से परे कार्य तथा हमारे अधिदेशों को दीर्घ कालीन लक्ष्य के संगत सृजन करने के लिये परिश्रम कर रहे हैं। संस्थान में विश्व स्तरीय उपकरणों की स्थापना की गयी है जो यह दिखाता है कि हम चिरस्थायी भागीदारी की स्थापना के लिए कितने सजग है।

मुझे आशा है कि हमारे उद्यम को बढाकर हमारी प्रगति को विशेषकर अनुसंधान उपलब्धियों को और भी उन्नत करने के लिये विश्लेषणात्मक कार्य की प्रगति करके दृढ विश्वास के साथ आगे बढ रहे हैं। यह हमारे अनुसंधान ज्ञान की डोमेन बनाकर अपने विकास कार्यों को आगे बढाने में के सहायक होंगे।

एम. आनन्दराज

(एम. आनन्दराज)

विषय सूची

अनुसंधान	2
पुरस्कार/सम्मान	3
प्रमुख घटनायें	4
हिन्दी अनुभाग	6
तकनीकी स्थानान्तरण	6
कृषि विज्ञान केन्द्र	7
प्रकाशन	7

अनुसंधान

जननद्रव्य संकलन

काली मिर्च के 38 कल्टिवेटड अक्सेशनों को केरल के कोट्टयम जिले से संचित किया गया जिसमें विख्यात कल्टिवर जैसे, नारायकोटी, पेरुमकोटी, कुरियलमुंडी, नीलमुंडी, चोलमुंडी तथा नेटुमचोला शामिल हैं। छोटी इलायची का एक अक्सेशन (मलबार प्रकार) को इदुक्कि जिले के कन्नि एलम ग्रोयिंग ट्रेक्ट्स, मोरकाड, तोटुपुषा सं संचित किया गया।

इलायची का नया अक्सेशन

कोलम विधि द्वारा काली मिर्च की स्वस्थ रोपण सामग्रियों का उत्पादन

आई आई एस आर पार्म पेरुवण्णामुषि के जननद्रव्य पौधशाला में एक पोलीहाउस के अन्दर नौ कोलम की स्थापना करके अक्तूबर 2014 को प्रत्येक कोलम में काली मिर्च की एक प्रजाति का रोपण किया गया। अब तक इन नौ कोलम से कुल 345 शीर्ष प्ररोह, 165 लेटरल्स, 445 एक नोड वाली कतरनें प्राप्त हुई। इन प्रजातियों में श्रीकरा, शुभकरा, आई आई एस आर थेवम, आई आई एस आर मलबार एक्सल, आई आई एस आर गिरिमुंडा, पौर्णमी, पंचमी, आई आई एस आर शक्ति तथा पी एल डी -2 शामिल हैं।

पेरुवण्णामुषि फार्म से कोलम विधि द्वारा काली मिर्च की रोपण सामग्री का उत्पादन

आई आई एस आर के क्षेत्रीय स्टेशन अप्पंगला में भी कोलम विधि द्वारा काली मिर्च की स्वस्थ रोपण सामग्रियों का उत्पादन शुरू किया गया। लगभग तीस कोलम की स्थापना की गयी तथा उनमें पौधों की अच्छी वृद्धि हो रही है। काली मिर्च की प्रजातियां जैसे, आई आई एस आर थेवम, आई आई एस आर मलबार एक्सल, पंचमी, पन्नियूर - 1 आदि का उत्पादन किया जा रहा है।

अप्पंगला में कोलम मे काली मिर्च का उत्पादन

रोगाणुहीन जायफल बीज

एक विशिष्ट, अनूठा रोगाणुहीन जायफल अक्सेशन जिसमें साधारण फल है लेकिन मूलभूत बीज तथा अच्छी तरह पैक किये बहु परतदार, मानव बुद्धि की आकृति जैसी जावित्री वाले अक्सेशन को किसानों के बाग के घरेलू वृक्ष से संचित किया जिसका चरित्रांकन किया गया है। बीज अनुर्वरता मादा पेडों में ज्यादा नहीं है, अधिकांशतः डायोशियस या मोनेशियस पौधे जैसे जायफल भी नहीं है। यह नवीन अकसेशन है।

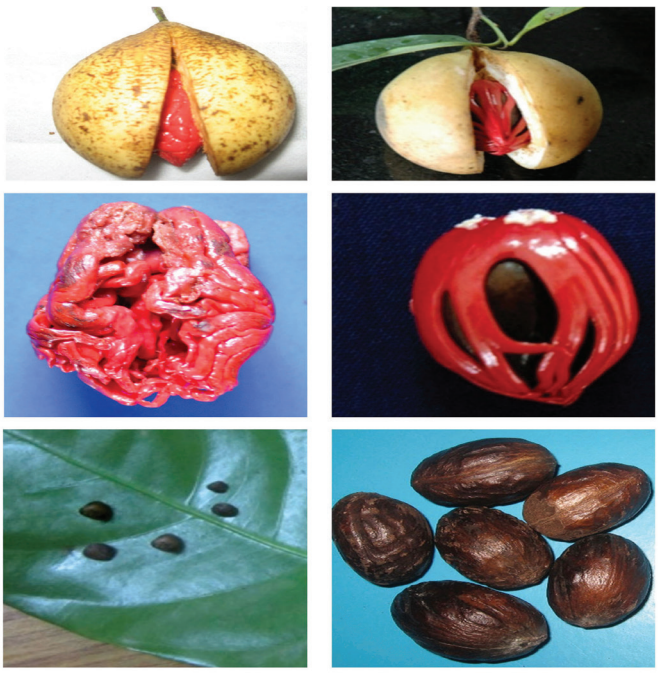

जायफल का विशिष्ठ अक्सेशन

पुन्नत्तानम जायफल को राष्ट्रीय नवोत्पाद निर्माण पुरस्कार

सेलक्शन द्वारा विकसित मोटे फल / बीज तथा उच्च उपज वाली 'पुन्नत्तानम जाति' जायफल की एक उच्च उपज वाली प्रजाति को, जो श्री सवरक्की तोम्मन, कोन्नत्ताटी, इदुक्की द्वारा सालों से विकसित की गयी। संस्थान द्वारा राष्ट्रीय नवोत्पाद निर्माण पुरस्कार के लिये संस्तुत किया गया। इसके पौधे जल्दी

फल देने तथा इसके फल मोटे होते हैं। इनके फलों का शुष्क वज़न 20 ग्राम तथा जावित्री का वजन 4 ग्राम है। वीसवीं साल में प्रत्येक वृक्ष के फलों की औसत संख्या 1750 है।

श्री. वरक्की तोम्मन पुन्नत्तानम, कृषक जायफल के पेड के साथ

आलस्पाइस का पुष्पण

आई आई एस आर फार्म पेरुवण्णामुषि में बीस वर्ष पुराने आलस्पाइस पेड ने पुष्पित होकर बीजों का उत्पादन किया, जो आलस्पाइस पुष्पण के लिए उप्युकत स्थान नहीं है। पिछले साल के बीजों से प्राप्त आलस्पाइस के बीज पौधे फार्म में बिक्री के लिये उपलब्ध है।

क्षेत्रीय स्टेशन में, आलस्पाइस पौधे तथा कई फूलों का उत्पादन किया तथा सभी पौधों में कई फल को अंकित किया। पिछले मौसम में शाखाओं को काटने पर वृक्ष फल में वृद्धि अंकित की गयी।

पेरुवण्णामुषि फार्म में आलस्पाइस की फल सजावट

अप्पंगला में अधिक फल युक्त आलस्पाइस पेड

इलायची के प्रकन्द गलन रोग के लिये नये कवकनाशियों का मूल्यांकन

पी. वेक्सान्स, आर. सोलानी तथा *एफ. ओक्सिस्पोरम* के प्रति कवकनाशियों जैसे, फेनामिडन + मैंकोज़ेब (0.2%), कप्तान + हेक्साकोनाज़ोल (0.2%), तथा टेबुकोनाज़ोल (0.05%) का मूल्यांकन करने के लिये इलायची पौधों (प्रजातिः अप्पंगला -1) के साथ गमला संवर्धन परीक्षण आयोजित किया गया। जांच किये तीन कवकनाशियों में से टेबुकोनाज़ोल (0.05%) को *आर. सोलानी* तथा *एफ. ओक्सिस्पोरम* के प्रति ग्लास हाउस में प्रभावी अंकित किया गया। जबकि, जांच किये कवकनाशियां *पी. वेक्सान्स* के प्रति प्रभावी नहीं थे।

पुरस्कार/सम्मान एवं मान्यतायें

एस. जे. आंकेगौडा

डां. एस. जे. आंकेगौडा, कार्यालयाध्यक्ष, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला को दिनांक 25-16 अप्रैल 2015 को यु एच ए एस एक्स्टेंशन यूनिट, ब्राह्मावार द्वारा आयोजित मसाला तथा औषधीय पौधों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मनित किया गया।

डां. एस. जे. आंकेगौडा का सम्मान

ए. आई. भट्ट

दिनांक 18 जून 2015 को जैवप्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, यु. ए. एस. धारवाड के पी एच डी छात्रों के लिये आयोजित मौखिक परीक्षा के परीक्षा बोर्ड के बाह्य परीक्षक।

ई. जयश्री

दिनांक 5 मई 2015 को केलप्पजी कोलेज ओफ इनजीनीयरिंग एवं तकनोलोजी के एम. टेक. (कृषि संसाधन एवं खाद्य इंजीनीयरिंग) की योग्यता परीक्षा की बाह्य परीक्षक।

टी. जोन ज़करिया

- सी एस आई आर, नई दिल्ली में 30 जून 2015 को परियोजना प्रस्ताव की समीक्षा के लिये डोमेन विशेषज्ञ दल का सदस्य।
- दिनांक 6 मई 2015 को आयोजित, पी एच डी मौखिकी, स्कूल ओफ बायोसाइन्सस, महात्मा गांधी विश्व विद्यालय, कोट्टयम के अध्यक्ष।

एस पी पी एस मेरिटोरियस वैज्ञानिक पुरस्कार 2015

डा. राशिद परवेज़ को सोसाइटी ओफ प्लान्ट प्रोटक्शन साइन्सस, एन सी आई पी एम, नई दिल्ली द्वारा सूत्रकृमि विज्ञान मे विशिष्ठ योगदान के लिये एस पी पी एस मेरिटोरियस वैज्ञानिक पुरस्कार 2015 से से सम्मनित किया गया।

श्रेष्ठ शौध पत्र पुरस्कार

डा. राशिद परवेज़ को दिनांक 23-25 अप्रैल 2015 को एम पीयु ए तथा टी, उदयपुर, राजस्थान में डायनामिक्स ओफ क्रोप प्रोटक्शन : चलेंजस इन एग्रि- होर्टीकल्चरल एकोसिस्टम्स फेसिंग क्लाइमेट चेंजस पर आयोजित ग्यारहवीं राष्ट्रीय संगोष्ठी में नेमटिसिडल एक्टिविटी ओफ न्यू जनरेशन पेस्टिसाइड्स अगेन्स्ट बरोयिंग नेमटोड, *राडोफोलस सिमिलिस* (सी ओ ओ बी बी 1893), थोर्न 1949 इनफेस्टिंग ब्लैक पेप्पर पर राशिद परवेज़ एवं सन्तोष जे. ईपन के शोध पत्र के लिये श्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुतीकरण पुरस्कार से सम्मानित किया।

संस्थानीय स्पोर्ट्स मीट कोचि में पुरस्कार

मई 2015 को आई सी ए आर- सी आई एफ टी, कोचि में आयोजित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तः संस्थानीय स्पोर्ट्स मीट में श्री. पी. मुरलीधरन, सहायक प्रशासनिक अधिकारी को स्वर्ण पदक (ऊंची कूद) तथा रजत पदक (400 मीटर दौड) तथा श्री पी. के. राहुल, निम्न श्रेणी लिपिक को कांस्य पदक (1500 मीटर दौड) प्राप्त हुये।

प्रमुख घटनाएं

संस्थान शोध समिति की बैठक

भाकृअनुप- भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान की संस्थान शोध समिति की वार्षिक बैठक 01-02 मई 2015 को डा. एम. आनन्दराज, निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस अवसर पर निदेशक ने अनुसंधान तथा गहन प्रबन्धन तकनीकियों का विकास, जल उत्पादकता, संरक्षित खेती आदि परियोजनाओ को प्राथमिकता देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अनुसंधान के उन्नत लक्ष्य प्राप्त करने के लिये एक टीम के रूप में मिलकर काम करने की आवश्यकता है। फसल सुधार एवं जैव प्रौद्योगिकी सत्र की अध्यक्षता डा. जे. रमा, प्रभारी प्रभागाध्यक्षा (फसल सुधार एवं जैव प्रौद्योगिकी); फसल उत्पादन एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी सत्र की अध्यक्षता, डा. जेम्स जोर्ज, परियोजना समन्वयक (कन्द फसल), भाकृअनुप-केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनन्तपुरम तथा डा. टी. जोण ज़करिया, प्रभागाध्यक्ष (फसल उत्पादन एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी) तथा फसल संरक्षण सत्र की अध्यक्षता डा. एस. देवसहायम, प्रभागाध्यक्ष, फसल संरक्षण प्रभाग ने की। डा. एस. जे. आंकेगौडा, कार्यालयाध्यक्ष, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला ने समाज विज्ञान अनुभाग सत्र की अध्यक्षता की। इन दो दिनों में प्रत्येक परियोजना में अर्जित प्रगतियों को प्रस्तुत करके चर्चा की गयी। वर्ष 2015-16 के लिये प्रत्येक परियोजना हेतु तकनीकी कार्यक्रम को निश्चित किया गया।

फसल उत्पादन एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी सत्र

निम्नलिखित तकनीकियों को प्रस्तुत करके चर्चा की तथा अतिरिक्त अंभीकरण के लिये विस्तार कर्मियो को देने के लिये अनुमोदित किया गया।

❖ इलायची थ्रिप्स का प्रबन्धन

इलायची थ्रिप्स (*सयोथ्रिप्स कारडमोमी*) के प्रति एक तकनीकी को तीन वर्ष तक अप्पंगला (करनाटक) के खेत में 11 कीटनाशकों तथा प्रकृतिक उपजों का मूल्यांकन करके विकसित किया गया। तीन वर्षों के डेटा का संयुक्त विश्लेषण यह सूचित करता है कि फिप्रोनिल 0.005% द्वारा उपचारित पौधो में कैप्स्यूल की हानि का निम्नतम प्रतिशत (6.5%) अंकित किया गया, जो इमिडाक्लोप्रिड (0.0089%) थियामेथोक्साम (0.0075%) तथा स्पिनोसाड (0.0135%) फरवरी-मार्च, मार्च-अप्रैल, अप्रैल-मई तथा सितम्बर एवं अक्तूबर में पांच बार छिडकने पर मिलने वाले परिणाम काफी आशावान था। यह निष्कर्ष निकाला कि स्पिनासाड (जो *साकारोपोलीस्पोरा स्पिनोसा* से उत्पन्न है) का पर्यावरण पर कम प्रतिकूल प्रभाव के कारण इलायची में थ्रिप्स नियन्त्रण के लिये कृत्रिम कीटनाशक के स्थान पर प्रयुक्त कर सकते हैं। इसका जैविक खेती में भी प्रयोग किया जा सकता है।

❖ जायफल की अफ्लाटोक्सिन संदूषण को रोकने के लिये पूर्व विभाजित फसलन एवं एथरेल उपचार

खुले जायफल को मृदा में अनावरण किये बिना छेदित करने के लिये होरमोन उपचार की एक सरल विधि को विकसित किया गया। कार्य प्रणाली में पपडी का रंग हरे से हल्के पीले / पीले रंग में बदल जाने पर दैहिक रूप से परिपक्व फलों की कटाई तथा उन्हें 500 पीपीएम एथरेल (2 क्लोरोआथाइलफोस्फोनिक एसिड) विलयन में 10 मिनट तक डुबोकर रखने के बाद छायेदार जगह में सुरक्षित रखना आदि हैं। इस प्रणाली द्वारा 90-100% फल 18-20 घंटे में टूटेगा।

❖ उच्च उपज वाली अल्प अवधि की हल्दी प्रजाति

उच्च उपज वाली अल्प अवधि (160-180 दिन) की हल्दी प्रकार (अक्सेशन 48) को जर्मप्लासम संलक्शन द्वारा विकसित किया गया। वर्ष 2009-2012 में किये गये उपज मूल्यांकन परीक्षण में तीन वर्ष की अधिकतम औसत उपज अक्सेशन 48 (31.95 टन/हेक्टेयर) की अंकित की गयी। यह बहु स्थानीय किसानों के खेत परीक्षण (2013-15, 39.73 टन/हेक्टेयर) के अन्तर्गत

तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, केरल तथा करनाटक में राष्ट्रीय एवं स्थानीय परीक्षण की अपेक्षा अच्छी दिख रही है। इस में अधिक कुरकुमिन की मात्रा (5%) है।

संस्थान तकनीकी प्रबन्धन इकाई

काली मिर्च की सूक्ष्म पोषण मिश्रण 'पन्नियूर एस' का लोकार्पण

काली मिर्च की सूक्ष्म पोषण मिश्रण 'पन्नियूर एस' के उत्पादक का लोकार्पण समारोह दिनांक 11 मई 2015 को भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान में आयोजित किया गया। इस उत्पादक का लोकार्पण डा. एम. आनन्दराज ने सूक्ष्म पोषण तकनीकी के प्राधिकृत लाइसेंसी डा. किरण अनेगुंडी, अध्यक्ष, श्रेय एग्रिटेक, हुब्ली के सान्निध्य में किया गया। डा. किरण ने करनाटक के काली मिर्च उत्पादक क्षेत्र में इस उत्पादक की सफलता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस बैठक में केरल तथा करनाटक के चयनित प्रगतिशील किसानों तथा दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

काली मिर्च के सूक्ष्म पोषण मिश्रण 'पन्नियूर एस' का लोकार्पण

सूभिक्षा, नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड तथा श्री नदीर, नये उद्यमी के साथ एम ओ यु

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड ने सूभिक्षा, नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड के साथ पेरुवण्णामुषि में मसालों की संसाधन इकाई की सुविधाओं को उपयुक्त कराने के लिये एक मेमोरेन्डम ओफ अन्डरस्टेंडिंग किया। संगठनों ने 4 जून 2015 को भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान की केंपस में आयोजित एक सामारोह में एम ओ यु पर हस्ताक्षरित किये। समारोह की अध्यक्षता डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान ने की। श्री. कुंजहम्मद मास्टर, अध्यक्ष, सुभिक्षा तथा दोनों संगठनों के प्रबन्धन दलो ने समारोह में भाग लिया। इस सुविधा को उपयुक्त करने के लिये श्री पी. एम. नदीर, उद्यमी के साथ उसी दिन एक अन्य करार पर भी हस्ताक्षर किये।

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान तथा सुभिक्षा के बीच एम ओ यु करार

पर्यावरण दिवस समारोह

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान में 5 जून 2015 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान के चेलवूर, कोषिक्कोड केंपस में दुर्लभ वृक्ष जातियों का रोपण किया। डा. एम. आनन्दराज, निदेशक ने कार्यालय परिसर में नागलिंगम पौधे (कैनन बाल ट्री) का रोपण करके रोपण समारोह का उद्घाटन किया। संस्थान के केंपस में प्रत्येक नक्षत्र के निशान के लिये पौधों का रोपण करके नक्षत्रों के बाग (नक्षत्र वनम) को स्थापित किया। श्री. एन. टी. साजन, उप वन संरक्षक, सोशियल फोरस्ट्री एक्स्टेंशन डिविज़न, कोषिक्कोड ने पर्यावरण सुरक्षा के लिये जैव विविधता के प्राधान्य पर एक विशेष व्याख्यान दिया। रोपण किये अन्य दुर्लभ पोधों में रुद्राक्षा (*इलयोकारपस गानिट्रस*), कदम्बा (*नियोलामराका कडम्बा*), इरिप्पा (*मधुका इनडिका* ज्मेल) तथा काले मोती का पौधा (*मजिडिया ज़न्गुबरिका*) आदि शामिल थे।

श्री. एन. टी. साजन, उप वन संरक्षक पर्यावरण दिवस पर व्याख्यान देते हुये।

अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा का आयोजन

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि तथा संबन्धित विज्ञान विषय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर की 20 वीं अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा दिनांक 11-12 अप्रैल 2015 को आयोजित की गयी। कोषिक्कोड केन्द्र में 8780 छात्रों ने स्नातक तथा 330 छात्रों ने स्नातकोत्तर के लिये प्रवेश परीक्षा के लिये नामांकन किया। डा. ए. ईश्वर भट्ट, प्रधान वैज्ञानिक इस कार्यक्रम के नोडल अधिकारी थे।

स्वाश्रय भारत 2015 के आयोजक

स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन, केरल (एस एस एम के) द्वारा आयोजित स्वाश्रय भारत 2015, 15-21 अक्तूबर 2015 को कोषिक्कोड में संपन्न होगी। डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान आयोजक समिति के अध्यक्ष होगे। यह समारोह भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड तथा एस एस एम, केरल मिलकर आयोजित करेंगे। इस सामारोह का प्रमुख लक्ष्य विज्ञान के विभिन्न पहलुओं जैसे, संगोष्ठी, विज्ञान प्रश्नोत्तरी एवं नाटक, छात्र-अध्यापक

संबन्ध, विज्ञान प्रदर्शन एवं प्रदर्शनियों द्वारा विज्ञान को लोकप्रिय करना है। उत्तर केरल के विभिन्न संस्थानों में विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर एक सैटलाइट संगोष्ठी का आयोजन करने पर विचार किया गया।

एस. एस. एम. के. की बैठक

पुस्तकालय

ईबीएस सी ओ डिस्कवरी तथा छः भारतीय जर्नल के शुल्क का नवीकरण किया गया। पांच नई पुस्तक तथा दो तकनीकी रिपोर्ट पुस्तकालय मे सम्मिलित की गयी। 'एग्रि टिट बिट्स' के दो इलक्ट्रोनिक अंको को प्रकाशित किया। इकतालीस बाह्य उपभोक्ताओं तथा 55 संस्थानिक सदस्यों ने पुस्तकालय सुविधाओं का उपयोग किया। अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता से स्वामी विवेकानन्दा के संपूर्ण कार्य (9 खण्ड) प्राप्त हुये, इन्हे पुस्तकालय पुस्तक कोष में सम्मलित किया गया।

हिन्दी अनुभाग

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान में दिनांक 22 जून 2015 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक डा. एम. आनन्दराज, निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में गत तिमाही में किये गये कार्यों की समीक्षा की गयी। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम को संस्थान में पिछले वर्ष की राजभाषा कार्यान्वयन की बिन्दुवार समीक्षा एवं चर्चा हुई।

कार्यशाला का आयोजन

संस्थान में दिनांक 17 जून 2015 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। प्रस्तुत कार्यशाला में श्री के. वी. महीन्द्रन, प्रबन्धक (राजभाषा), भारतीय स्टैट बैंक, कोषिक्कोड ने हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 17 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रकाशन

प्रस्तुत तिमाही में मसाला समाचार (अंक 26 खंड 1), अनुसंधान के मुख्य अंश (2014-15) एवं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की वार्षिक प्रतिवेदन (2014-15) के सार को प्रकाशित किया।

नराकास गतिविधियां

सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 21 अप्रैल 2015 को भारतीय प्राणी सर्वेक्षण कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में भाग लिया। डा. एस. देवसहायम, डा. राशिद परवेज़ तथा सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी ने दिनांक 28 अप्रैल 2015 को भारतीय प्रबन्धन संस्थान, कुन्नमंगलम, कोषिक्कोड में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 55 वीं अर्ध वार्षिक बैठक में भाग लिया। डा. राशिद परवेज़ ने 15 जून 2015 को स्टैट बैंक ओफ त्रावणकोर, एरंजिपालम में नराकास राजभाषा सम्मेलन 2015 की कोर समिति की बैठक में भाग लिया।

प्रमुख आगन्तुक

नाम	पदनाम एवं कार्यालय	दिनांक
डा. के. रामस्वामी,	उप-कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर	9 अप्रैल 2015
श्री. राजू बारवाले	प्रबन्ध निदेशक, एम ए एच वाई सी ओ, मुंबई	19 मई 2015
श्री. आशिश बारवाल	निदेशक एम ए एच वाई सी ओ, मुंबई	19 मई 2015
डा. राजेन्द्र मराथे	दल के प्रधान, एम ए एच वाई सी ओ बीज, जलना	19 जून 2015
डा. एन. कुमार	प्रोफेसर एवं पूर्व डीन (बागवानी), तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर	27 जून 2015

तकनीकी स्थानान्तरण

कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र

छः सौ बयासी किसानों ने (294 किसान अन्य जिले के) अप्रैल-जून 2015 में एटिक से परामर्श सेवायें प्राप्त की। इसके अलावा विभिन्न स्कूल एवं कोलजों से 166 छात्रों ने केन्द्र का भ्रमण करके संस्थान के कार्यक्रम एवं सुविधाओं के बारे मे जानकारी हासिल की।

दस किसान दलो ने विभिन्न राज्यों से ए टी एम ए कार्यक्रम के अन्तर्गत लाभ उठाया। जिसमें सात केरल तथा तीन करनाटक राज्य से थे। विभिन्न संस्थाओं के दो सौ बीस छात्रों ने लाभ उठाया।

राजस्व

रिपोर्टाधीन काल में रोपण सामग्रियों एवं तकनीकियों को क्रय करके कुल 2,00,668 रुपये का राजस्व एकत्रित किया गया।

हल्दी तथा शकरकंद की जैविक खेती पर आदिवासी किसानों के लिये प्रशिक्षण

संस्थान ने एम एस एस आर एफ, कल्पट्टा के सहयोग से 15 मई 2015 को हल्दी तथा शकरकंद की जैविक खेती की उत्पादन तकनीकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। चौदह आदिवासी हैमलट के चयनित आदिवासी किसानों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। हल्दी की आई आई एस आर प्रतिभा प्रजाति की लगभग 300 कि. ग्राम रोपण सामग्रियां तथा शकरकंद की लोकप्रिय प्रजाति गजेन्द्र की 600 कि. ग्राम हैमलट को वितरण किया गया। डा. अनिलकुमार, निदेशक, कम्यूनिटी एग्रोबायोडाइवर्सिटी सेन्टर, एम एस एस आर एफ, कलपट्टा ने रोपण सामग्रियों का वितरण किया। इस प्रशिक्षण

कार्यक्रम से आदिवासी हैमलट के 30 आदिवासी किसानों तथा खेत समन्वयकों ने लाभ उठाया।

डा. अनिलकुमार, एम एस एस आर एफ शकरकंद की रोपण सामग्रियों को प्रशिक्षार्थियों को वितरण करते हुये।

स्पाइसेस बोर्ड के नये नियुक्त अधिकारियों का संस्थान भ्रमण

इन्डक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम "भारत दर्शन" के अंर्तगत स्पाइसेस बोर्ड के विभिन्न कार्यालयों में नये नियुक्त 24 सदस्यों के दल ने 22 मई 2015 को भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया। भ्रमण दल को संस्थान के कार्यक्रमों के बारे में विवरण प्रदान किया। दल ने संस्थान की प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया तथा मसाला अनुसंधान के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकियों के विकास के बारे में परिचित हुये।

कृषि विज्ञान केन्द्र

अग्र पंक्ति प्रदर्शनी

कृषि विज्ञान केन्द्र ने निम्नलिखित अग्र पंक्ति प्रदर्शनियों को आयोजित किया।

- अदरक की प्रो-ट्रे तकनीक की प्रदर्शनी।
- अदरक के मृदा गलन रोग के प्रबन्धन के लिये पी जी आर आर संपुटित जैव कैप्स्यूल के प्रयोग की प्रदर्शनी।
- स्वच्छ पानी में पर्लस्पोट मच्छलियों का बीज उत्पादन।
- मूल्य वर्धित उपजों का उत्पादन एवं विपणन।

खेतीगत परीक्षण

प्रस्तुत अवधि में निम्नलिखित खेतीगत परीक्षण आयोजित किये गये।

- खारे पानी तालाबों में एशियाई सीबास (*लेट्स कालकारिफर*) का संवर्धन
- काली मिर्च की उपज पर आई आई एस आर पोषण मिश्रण की दक्षता का मूल्यांकन।
- कलमी काली मिर्च की दक्षता का मूल्यांकन।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रस्तुत अवधि में किसानों, ग्रामीण युवाओं तथा विस्तार कर्मियों के लिये सत्ताईस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। इनमें आठ सौ चौरासी प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। कृषि विज्ञान के कार्मिकों ने किसानों के लिये 34 खेत भ्रमण, 147 परामर्श सेवायें आयोजित की तथा चेमंचेरी में एक खेत दिवस को भी आयोजित किया। प्रस्तुत अवधि में 811 किसानों ने कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण किया। कृषि विज्ञान केन्द्र ने जिला स्तर पर 5-6 मई 2015 को बालशास्त्र कोंग्रेस का आयोजन किया।

प्रकाशन

प्रस्तुत अवधि काल में 3 अनुसंधान पत्र, 1 पुस्तक पाठ, 1 पत्रिका तथा 12 लोक प्रिय लेखो को विभिन्न पत्रिको में प्रकाशित किया।

संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों ने विभिन्न संगोष्ठियों में भाग लिया तथा शौध पत्र प्रस्तुत किये।

नई नियुक्तियॉ

नाम	पद	दिनांक
डॉ. मोहम्मद फैसल पीरान	वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान)	13 अप्रैल 2015
डॉ. अलगुपालमुतिरसोलाइ	वैज्ञानिक (पादप दैहिकी)	15 जून 2015

पदोन्नति

नाम	पद	दिनांक
डा. टी. ई. षीजा	प्रधान वैज्ञानिक	27 जनवरी 2014
सुश्री सीमा एम.	उच्च श्रेणी लिपिक	23 अप्रैल 2015

स्थानान्तरण

नाम	पद	कार्यग्रहण किये कार्यालय का नाम	दिनांक
डा. रजिता एस.	वैज्ञानिक (कीट विज्ञान)	भाकृअनुप- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	25 अप्रैल 2015
डा. अवधेश कुमार	वैज्ञानिक (पौध जैव रसायन)	भाकृअनुप- राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक	30 अप्रैल 2015
डा. प्रतिभा लखोटिया	वैज्ञानिक (मसाला रोपण, औषधीय एवं एरोमटिक पौधे)	भाकृअनुप- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	30 मई 2015

सेवानिवृत्ति

नाम	पदनाम	दिनांक
श्री. ई. के. मोहनदास	सहायक कर्मचारी	31 मई 2015
सुश्री. एच. बी. नागम्मा	सहायक कर्मचारी	31 मई 2015
श्री. उण्णि नायर	सहायक कर्मचारी	31 मई 2015
डा. सुषमादेवी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	31 मई 2015
श्री. चन्द्रन नायर	सहायक कर्मचारी	30 जून 2015

मसाला समाचार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन

भा. कृ. अनु. प. - भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड- 673012 (केरल), भारत
दूरभाष : 0495 2731410, फेक्सः 0495 2731187

नोटः पी डी एफ संस्करण वेब साइट http://www. spices.res.in/ newsletter/ index.php पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशक
एम. आनन्दराज
निदेशक
भा. कृ. अनु. प. - भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड

संपादक
राशिद परवेज़
एन. प्रसन्नकुमारी

छाया चित्र
ए. सुधाकरन

Printed at: G K Printers, Kaloor, Cochin - 682 017. Phone : 0484 2340013. Email : gkcochin@gmail.com